सप्तम अध्याय

महीप सिंह की कहानियों में शिल्प-विधान की विशेषताएँ

* **प्रस्तावना**

7.1 महीप सिंह की कहानियों में शिल्प-विधान की विशेषताएँ

(7.1.1) महीप सिंह की कहानियों में कथानक

(7.1.2) महीप सिंह की कहानियों में पात्र-चरित्र चित्रण

(7.1.3) महीप सिंह की कहानियों में कथनोपकथन या संवाद

(7.1.4) महीप सिंह की कहानियों में देशकाल या वातावरण

(7.1.5) महीप सिंह की कहानियों में भाषा-पक्ष

(7.1.6) महीप सिंह की कहानियों में शैली-तत्व

(7.1.7) महीप सिंह की कहानियों में उद्देश्य

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

सप्तम अध्याय

महीप सिंह की कहानियों में शिल्प-विधान की विशेषताएँ

*** प्रस्तावना**

व्यक्ति अपनी भावनाएँ और अनुभूति किसी भी कला के द्वारा व्यक्त करता है। कहानी के रुप में भी प्रस्तुत कर सकता है। कहानी के साहित्य में भी कथा शिल्प के विकास का बदलाव आ रहा है। जिसके सफल प्रयोग से रचनाकार सर्जनात्मक एवं कौशलतापूर्ण कथ्य का निरूपण कर पाठक को प्रभावित करता है। साहित्यिक रचना की शुरुआत से लेकर अंत तक की प्रबंध-व्यवस्था को शिल्प विधान कहा जाता है। **"**कहानी की रचना में जिस तरह अनुभूति उसके तत्वों में ढालती जाती है वही उसकी तकनीक है। दूसरी ओर एक निश्चित लक्ष्य अथवा एकान्त प्रभाव की पूर्ति के लिए कहानी की रचना में जो एक विधानात्मक प्रक्रिया उपस्थित करनी पड़ती है वही उसकी शिल्पविधि है।**"1**

शिल्प कलात्मक निर्वाह की पध्धति है। शिल्प शब्द 'शिल्पधातु'और 'पक' प्रत्यय से बना है। कहानी के अंतर्गत शिल्प का महत्व अलग ही है। शिल्प के बीना कहानी नीरस बन जाती है। शिल्प ही कहानी को सजीवता प्रदान कर रोचक बनता है। कहानी में विषयवस्तु के साथ ही शिल्प भी मुख्य है, इस संबंध में मार्क शोरर ने कहा है कि - **"**जब हम शिल्प की बात करते है क्योंकि शिल्प ही वह साधन है जिसके माध्यम से लेखक का अनुभव जो कि उसकी विषयवस्तु है उसे अपनी ओर ध्यान देने के लिए विवश करता है शिल्प एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा रचनाकार अपने विषय को खोजता है उसकी छानबीन करता है उसका विकास करता है उसी के माध्यम से वह उसके आर्य को संप्रेषित करता है और अन्त में उसका मूल्यांकन करता है।**"2**

महीप सिंह लिखते है कि - **"**अच्छी कहानी कभी भी यथार्थ की पुनरावक्तियां दोहराव नही होती। और न ही वह मरीचिका होती है। वह यथार्थ से आगे यथार्थ का पुनरावर्तन होती है। वह अनुभूति सच को कला की अपेक्षाओं और कसौटी पर कसती हुई अपना रस्ता बनाती है।**"3**

महीप सिंह की कहानियों में कथ्यगत परिवर्तन के साथ-साथ अभिव्यक्ति के विषय में भी बहोत बड़ा परिवर्तन आया है। उनकी कहानियों में सचेतन दृष्टि अंतर्गत जीवन की विसंगतियों, विडंबनाओं, कुंठाओं, संघर्षों के बीच जीवन जीने और जानने की दृष्टि उजागर होती है। वैसे तो देखा जाऐ तो महीप सिंह की कहानियाँ शिल्प से ज्यादा न होकर विचार के स्तर पर आधारित है। जिससे कहानियों का शिल्प विधान का महत्व कम दिखाई देता है। 'सचेतन' कहानी के समर्थक 'सचेतन' कहानी को सक्रिय भावबोध की कहानी के रुप में स्वीकार करते है। संघर्षों की जो प्रवृत्ति 'सचेतन' कहानी में दिखाई देती है।

7.1 महीप सिंह की कहानियों में शिल्प-विधान की विशेषताएँ

महीप सिंह के कथा शिल्प की एक प्रमुख विशेषता है उनकी कलात्मक निस्संगता वे अपने समूचे रचना परिवेश में उस दूरी का निर्वाह करने में सदा सफल रहे हैं, जिसके अभाव में कहानी लेखक की अप्रत्यक्ष डायरी बनकर रह जाती है। महीप सिंह की इस विशेषता की ओर संकेत करते हुए डॉ.रामदरश मिश्र ने कहा है कि - **"**महीप सिंह की कहानियों की शक्ति यह है कि वे आज के विविध जीवन सत्यो की अनुभूतिमूलक विवृतियों है। लेखक ने कलात्मक निस्संगता से इन अनुभवों को रचा है।**"4** इस निस्संगता को अर्जित करने के लिए वे कुछ विशिष्ट कला युक्तियों का भी आक्षय लेते है।

(7.1.1) महीप सिंह की कहानियों में कथानक

कथानक का स्थान कथाशिल्प के अंतर्गत खूब महत्वपूर्ण है। कथानक को वृत्त या कथावस्तु भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे प्लोट भी कहते है। कोई भी सक्रिय पात्र के जीवन की कथा का अंश किसी कालक्रम में गतिशील करने में एक संबंध योजना, एक तर्क संगत व्यापार, एक प्रभाव, जीवन का अनुभव का लक्ष्य सामने रहता है, जिसके लिए सारे विषय को चाक्रिक क्रम भी दिया जा सकता है। काल और देश के संदर्भ को उभारने के लिए कथानक में आरोह-अवरोह वतुलता प्रत्यावर्तन यह सबकी जरुरत पड़ती है। कथानक को सतत गतिशील रहता है। कथानक चाक्रिक समयान्तर, दोहरे, प्रतीकात्मक यह सबसे बनता है।

हमारे जीवन में घटनाओं को कहानी के कथ्य के रुप में देखना एक अपने आप में कलात्मक अभिव्यक्ति है। महीप सिंह की अधिकांश कहानियाँ कथावस्तु की दृष्टि से अपने आप में परिपूर्ण है। महानगरीय परिवेश के कहानीकार होने के बावजूद उनका कथानक का विस्तार अत्यंत वैविध्यपूर्ण है। उन्होंने अपने अनुभव क्षेत्र की घटनाएँ उनकी कहानियों में कथ्य का रुप बन जाता है। महीप सिंह ने अपनी कहानियाँ में नारी का अकेलापन, नारी का अजनबीपन, स्वार्थ, आर्थिक अभाव में नारी, नारी की यौनसंबंधों की कामना, नौकरी पेशा नारी, नारी की स्वतंत्रता वाली दृष्टि, संस्कारों के नीचे दबा प्रेम, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी के औपचारिक रिश्ते आदी को कहानियों का कथानक बनाया है। इस तरह कहानीकार ने कहानियों का कथ्य जीवन की घटनाएँ और दैनिक किया से प्रभावित होता है।

महीप सिंह के कथ्य में सत्य को रचनात्मक रुप में प्रस्तुत किया है। जिसमें मानव मूल्यों की सही पहचान और उन्हें उजागर करने का अपूर्व समर्थ है। मनुष्य की वर्तमान जीवन की विकृतियां, विडंबनाओं, विषमताओं के बीच एवं सक्रियता का बौध इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने समाज, व्यक्ति, परिवार में आए तनाव को अपनी कहानी का कथ्य बनाकर प्रस्तुत किया है।'काला बाप गोरा बाप','घिराव','ब्लाटिंग पेपर','घिरे हुए क्षण' यह कहानी में नारी के पारिवारिक संबंधों को बड़ी ही तलखी के साथ उभारा गया है। कथ्य में उन्होंने माँ-बेटी, बाप-बेटी संबंधों का स्वार्थ और थोड़ी संवेदनाओं के दायरे नये मूल्यों और नई सच्चाइयों को उभारा है। इस दृष्टि से 'कील','फॉक्स','परवरिश के लिए' कहानियों के नाम आ सकते है।

महीप सिंह ने अपनी कहानियों में 'स्व' को प्रमुख बताकर नारी जीवन में से पलायन या अनास्था, घुटन, हताशा यह सब वैचारिक को नकार दिया है। नारी के निष्ठ, आत्मकेंद्रित प्रवृत्तियों को वृद्ध मानवीय आयाम दिया है। यही सब को कहानी की विषयवस्तु बनाया है। उन्होंने नारी के महानगरों में भागेजाते जीवन को आपसी संबंधों की कड़वी अनुभूति को बताने का प्रयास किया है।'शोर','घिराव', 'घिरे हुए क्षण','उजाले के उल्लू' यह सब कहानी आती है।

महीप सिंह की कहानियों का कथ्य पुराने मूल्यों का एहसास कराती है। विचार में परिस्थितियों के अनुसार संस्कार करते जाना यदि आधुनिकता है तो संस्कारित अनुभूति की संपृक्कता से चित्रित करना सचेतन दृष्टि जिसमें किसी भी प्रकार के आरोपण या नकली मानसिकता के लिए कोई जगह नहीं है, इसलिए कथ्य में जीवन की स्वस्थता को प्रमुखता दी गई है। इनमें निराशा, पराजय, कुण्ठा, यौन विकृतियों का विरोध हुआ है। डॉ.वेद प्रकाश अमिताभ लिखते है कि - **"**महीप सिंह की

कहानियों की शक्ति उनके कथ्य में है। वे न तो भाषा के किसी नये उत्तेजक मुहावरे के मोहताज है और न किसी शिल्प-चातुरी के चलते उनकी चर्चा हुई है। कही कही पे ऊपर से सामान्य लगती है, मगर किसी बिन्दु पर उनकी असाधारणता एक दम फ्लैश बन उठती है।**"5** इनकी 'कील','ब्लाटिंग पेपर' कहानियाँ इस प्रकार की है।

मानवीय के सामान्य जीवन प्रसंगों पर आधारित 'उलझन','सन्नाटा', 'घिरे हुए क्षण' जैसी कहानियों के कथ्य में मूल संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। शिल्प पक्ष में नवीनता लाने के लिए कहानीकार आस-पास की घटनाओं को कथानक में सहज रुप से व्यक्त करते है। उत्तेजक, संकेतात्मक, प्रतीकात्मक, कुतुहलवेधक, प्रेरणादायी आदी शीर्षक में महीप सिंह नवीनता को प्रमाण करते है। कथ्य की मूल संवेदना व्यक्त शीर्षक के द्वारा होती है। कहानी का शीर्षक का नाम मात्र से भी मूल पात्र, भाव, घटना आदी का पता चल जाता है। 'ब्लाटिंग पेपर' में नारी शोषण के भाव 'एक लड़की शोभा' से शोभा का चरित्र विशेष का संकेत आदी शीर्षक से प्राप्त हो जाता है।

महीप सिंह ने 'उजाले के उल्लू', 'कील', 'ब्लाटिंग पेपर' जैसी कहानियाँ का प्रतीकात्मक शीर्षक रखा है। 'काला बाप गोरा बाप' कहानी का व्यंग्यात्मक शीर्षक रखा है। 'कील' में मोना अपना किल खुरेचकर निकाल फेंकने की किया में उसके बड़ी उम्र तक अविवाहित रहने की पीड़ा प्रतीकात्मक होती है। 'काला बाप गोरा बाप' की शहनाज को काला बाप नही चाहिए। **"**यह बाप नहीं लूंगी ..... हां..... शीरी को गोरा बाप देती है..... असीम को गोरा बाप देती है और मुझे काला बाप देती है। मैं यह काला बाप नहीं लूंगी।**"6** यह वाक्य व्यंग्य का संकेतात्मक रुप से देखा जाए तो 'एक लड़की शोभा','कटाव','एक पुरुष एक स्त्री' में उजागर

होता है। इस तरह संकेतात्मक, प्रतीकात्मक, कहानियों के शीर्षक, कथानक उनकी शिल्प क्षेत्र में विशेषताएँ प्रमाण करता है।

कहानियों में मूल तीन अंग प्रारंभ, मध्य और अंत भाग की संगठन से सफल कथानक बनता है। महीप सिंह की कहानी में ज्यादातर मानवी के संबंध जटिल एवं अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष करता मालूम पड़ता है। कही लोग कहते है महीप सिंह अपनी कहानियों में कथानक पर ज्यादा सतर्कता नही दिखाई देती है। मगर कहानीकार अपनी अनुभूति को कथानक का स्वरूप प्रदान करते समय प्रारंभ, मध्य और अंत के बीच संतुलन बनाने का प्रयास नही करते है। फिर भी सहज रुप से तीनो अंग दिखाई पड़ते है। **"**यदि उत्तम कहानी की कसौटी यह है कि वह एक बैठक में समाप्त हो जाये तो इसके लिए पाठक को कहानी के प्रारंभ भाग से प्रेरणा होती है। कहानी का प्रारंभ कथा-कथन, इतिवृत, कुतुहूल, प्रवृत्ति तथा मानवीय चरित्रों से मनोदगारों के द्वारा होता है।**"7** साहजिक और स्वाभाविक रुप से अधिकांश कहानियों का प्रारंभ होता है। हम 'उलझन' कहानी का प्रारंभ देखे तो **"**कॉलेज से आते ही प्रोफेसर महेन्द्र सिंह ने अपना कोट और टाई उतारकर पलंग पर फेंक दी। पप्पी पलंग पर सोई हुई थी और सुरजीत कौर पार ही रसोई में बैठी खाना गर्म कर रही थी।**"8** कहानी का प्रारंभ कथ्य की स्थिति का न संकेत करता है न कथन करता है और न ही चित्रण करता है। वह केवल व्यक्ति के सामान्य व्यवहार को दर्शाता है। कहानी का कथ्य मध्य से अंत तक आते आते संवेदनात्मक तनाव का स्वरूप प्राप्त कर लेता है।

महीप सिंह ने नूतन प्रयोग भी किये है कथा-शिल्प में वह नूतन प्रयोग कही अच्छा रहा तो कही बूरा साबित हुआ है। 'कील' कहानी में पिता के अत्यंत आधुनिक विचार उसकी बेटी मोना के अंतर्दंद्व का कारण बन जाता है, ऐसी कथ्य वाली कहानी भावनाओं पर प्रहार कर

महानगरीय रिश्तों की निरर्थकता और अमानवीयता साबित करते है। महीप सिंह की लिखावट में से कहानी में कथ्य निरर्थक होते हुए भी अंदर से नई दृष्टि प्रदान करते है। हाला की उनकी कहानी में कही निरर्थकता भी दिखाई देती है। 'कटाव' कहानी में हरनाम नामक कथानायक के सफर का जो कथ्य है वह निरर्थक दिखाई पड़ता है। **"**उसी दिन ख़ासी बरसात हुई थी। फिर डेढ सो मील का सफर, जिसे हमने मोटर साईकिल पर तय किया था। रास्ते भर बीच-बीच में बूंदा-बूंदी होती रही। ..... छोटा सा शहर कीचड़ से भरी सडकें, सड़कों पर बरसाती पानी से भरे गड्ढे।**"9** इस कथ्य से कहानी की मूल संवेदना का कई ताल-मेल नहीं बैठता है। महीप सिंह की कहानियों के आग्रह से क्षीण कर देता है। साधारण लोग लेखक का समृद्ध पात्र होते है। इनका अप्रेक्षित व्यवहार इनकी विलक्षणता विविधता कभी न समाप्त होनेवाली सामग्री प्रदान करता है। 'लोग' कहानी में देखें तो **"**मैं सोचता हूँ कि मेरे चारों ओर सब साधारण लोग बैठे है। पता नही किसके पीछे कौन सी विलक्षणता छिपी है।**"10**

कहानी को जो मध्य भाग होता है वह कथानक को संपूर्णता की और ले जाता है। कहानी के यह भाग में समस्या का उदघाटन, कथ्य का विकास, चारित्रिक विशेषताएँ के निरूपण से ही कथावस्तु है वह चरमसीमा तक आ जाती है। अधिकांश कहानियों मध्य भाग में उचित रुप से खरी उतरी है। मगर कही कहानियों के कथानक में अनुचित निरर्थक साबित हुआ है। 'शोर','फॉक्स' जैसी कहानियों के मध्य भाग कहानी कथ्य को बोझिल एवं कमजोर बनाता है।

कहानी का अंत इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है कि कहानी के अंत भाग में लेखक के लिए कसौटी समान होता है। जबकि पाठक के दिमाग पर अंतिम छाप इसी भाग के द्वारा बनती या बिगड़ती है।

कहानीकार की ज्यादातर कहानियों का अंत भाग उनकी सफलता एवं पाठकों की जिज्ञासा शांत करनेवाला साबित होता है। उदाहरण के लिए कहानी का अंत भाग लेते हुए - "तुम स्त्रियों को समझना तो शायद भगवान के बस में नही।"**11** (उलझन) "दोनों चुप बैठे थे। दोनों को लग रहा था, कोई चीज बड़ी तेजी से इधर से उधर दौड़ रही है। दौड़ती चीज न पकड़ी जा पा रही थी, न पहचानी जा पा रही थी।"**12** (शोर)

इस तरह महीप सिंह की कहानियाँ कथानक शिल्प में सभी पहलुओं का गठन या संयोजन सहज रुप से करते है। उन्होंने परंपरागत दृष्टिकोण को नकारते हुए अलग ही रचनात्मकता को एक सचेतन ऊर्जा प्रदान करने की कोशिश की है। कहानीकार ने एक मौलिक रुप का प्रयास किया है। महीप सिंह का मुख्य उद्देश्य कथानक के गठन मात्र का कतैव नही रहा, फिर भी उनकी कहानियों के कथानक ने सुचारु और कलात्मक अभिव्यक्ति का स्वरूप धारण किया है।

(7.1.2) महीप सिंह की कहानियों में पात्र-चरित्र चित्रण

महीप सिंह के नारी पात्र महानगरीय जीवन की विसंगतियों के बीच संघर्ष करते नजर आते है। महानगरीय जीवन का अकेलापन, अजनबीपन, आडंबर, कुण्ठा, स्वार्थ, विडंबना, हताशा आदि से नारी पात्र दिखाई देते है। महीप सिंह ने अपनी कहानियों में ज्यादातर पात्र अपने अनुभूत जगत से ही लिये हुए है। उनकी कहानियों में सीख पात्रों दिखाई देते है, जैसे की 'उलझन' कहानी में महेन्द्र सिंह और सुरजीत कौर 'उजाले के उल्लू' कहानी में कुलदीप जैसे आदी पात्रों महीप सिंह के अनुभूत परिवेश के प्रभाव को प्रमाणित करते है। जो उनके परिचित एवं आत्मीय मालूम होते है।

महीप सिंह ने पात्रों को सीख समुदाय तक सीमित नही रखा है, सामान्यीकरण होते वह सार्वजनिक तक पात्रों का रुप धारण किया है। उनकी कहानियों में जिन पात्रों का साक्षात्कार होता है, वे सभी पात्रों आम हमारी जिन्दगी के अलग-अलग धरातल पर प्राप्त होते है। जो महानगरीय परिवेश की परिस्थितियों के बीच संघर्ष करते नजर आते है। कहानीकार ने नगर की भीड़ में खो गये या संघर्ष से लड़ते पात्रों को पहचान दिलाने की कोशिश की है। उन्होंने अपनी कही कहानियों में पात्रों को सांकेतिक, सर्वनाम या निवैयक्तिक संबोधन कर पात्रों को उचित व्यक्तिगत प्रदान किया है। जैसे की 'परवरिश के लिए' उसने और औरत जैसे निवैयक्तिगत नाम, ऐसे संज्ञा के सहारे समसामयिक महानगरीय जीवन की विसंगत परिस्थितियों को शाश्वत स्वरूप प्रदान किया है। महीप सिंह पात्रों के चरित्रात्मक पक्ष की चमत्कारिता उत्पन्न करने के लिए अनायास प्रयास नही करते। **"**कहानी लिखते समय सायास पात्रों के नाम फिट करने की क्षरण होता है।**"13** महीप सिंह कहानी रचना के लिए आवश्यक सभी तत्वों से अच्छी तरह परिचित रहे है। इसलिए उन्होंने चरित्र को प्रभावशाली बनाने की जुगत में कहानी की मूल संवेदना को नजर अंदाज़ नही किया है।

महीप सिंह की कहानियों के नारी पात्रों ने मानो दूसरों के सुख में अपना आत्मसुख मान लिया है। जब उनके जीवन में इस बोझ से जडता आने लगती है तो वे विरोध करने में भी देर नही करती 'उलझन' कहानी की सुरजीत कौर। 'काला बाप गोरा बाप' की जमीला की है जो कि व्यवहारशील होकर आर्थिक दृष्टि से मजबूत अनवर को अपना लेती है। समय की गती के साथ चलना उसे जीवन को जीना लगता है। कहानी 'कील' की मोना भी बाप के छलावे से बाहर निकल आती है जैसे कोई अपने चेहरे से कील खरोचकर मुक्त हो जाता है। परन्तु कुछ पात्र ऐसे भी

है जो सामाजिकता के बोझ तले दबे रहकर जीते है, जैसे 'कटाव' कहानी की शीला जो संयुक्त परिवार बेमेल पति, अनचाहे जीवन, यातनामय परिवेश के साथ तालमेल पैदा करने की लगातार कोशिश कर रही है और छटपटाहट झेलते-झेलते ऐसा लगता है कि वह टूट जाएगी या मर जाएगी।

बहोत सारी कहानियों में मानवीय संम्बधों और उनके विधटन टूटते संम्बधों की चर्चा अनेक स्थानों पर हुई है। लेकिन फिर भी पात्रों का निराशा या कुंण्ठा के विरुद्ध सक्रिय रहना कहानीकार की सचेतन कहानियों का मूल आधार है। 'लोग' कहानी की नीला और 'कुछ और कितना' कहानी की मीसेज मेहता पुराने पारिवारिक ढांचे में परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरती, यातना झेल रही है। 'बाद की बात' कहानी में रोमा प्रेम प्रसंगों में धोखा खाती है, मगर फिर नई तलाश शुरू कर लेती है।

महीप सिंह की संचेतन सोच के वाहक नारी पात्र स्व को तलाश करते हुए विसंगतियों, विडंबनाओं और शोषण को झेलते अपने सामाजिक दायित्व निभाते हुए व्यावहारिकता को अपनाकर मुक्ति का मार्ग खोजते है। नारी पात्रों परिस्थिति से भागती नही बल्कि एडजस्टमेंट बिठाते है। उनके नारी पात्र अपने विवेक से निर्णय करना चाहते है - चाहे इसके आड़े स्त्री-पुरुषों के संम्बधों का अहं जाए उनकी शिक्षा उनका आत्मसम्मान होना अथवा यौन, कुठाए। वे हताशा से जूझते है। 'कुछ और कितना' कहानी की मिसेज मेहता और 'लोग' कहानी की नीला जिनकी वितीप स्थिति तो मजबूत है किन्तु पति से अलगाव का दुख झेल रही है। परिवर्तन से गुज़रते हुए भी वे अपना अलग स्थान बनाने के लिए प्रयासरत है।

शहरी मध्यमवर्गीय परिवारों में से आए पात्रों ही महीप सिंह की कहानियों में अधिकतर देखने को मिलते है। 'मैडम' कहानी का नारी पात्र बहुत ही जटिल रहस्यमयी और विचित्र पात्र है। मैडम का चरित्र न केवल आत्मसजग है बल्कि स्त्री मन का इतना सटीक विश्लेषण कही ओर देखने को नही मिलता। कामकाजी नारी कार्यालय के भीतर और बाहर पुरुषों से सम्बन्ध बनाती और अपना परिवार भी छोड़ भी नहीं सकती है। वह प्रेम-प्रसंगों में धोखा भी खाती है। वह एक अतृप्त जीवन जीने के लिए विवश बन जाती है। 'धूप की उंगलियों की निशान' की नीता। ये आधुनिक पात्र कही परिवेश से तो कही अपने आप से लड़ाई लड़ रहे है। वे कही संघर्ष करते है तो कही समझौते की जिन्दगी जीने के लिए विवश भी है।

इस तरह देखा जाए तो महीप सिंह के ज्यादातर नारी पात्र ऐसे है जो आधुनिक जिन्दगी की हताशा, संघर्ष, कुंण्ठा, स्वार्थवृत्ति, अकेलेपन, बेकारी, यौयनशोषण आदी के बीच सफर करते है। जो दफ्तरों में संघर्ष भीड़ के बीच रेंगते, सफर करते घर के भीतर झगड़ा, विवश होकर मूल्य संकट से पीड़ित पात्र स्वयं अपने अस्तित्व के प्रति आस्थायान मालूम पड़ते है। उन्होंने ज्यादातर अपने अनुभवों के क्षेत्र से पात्रों को उपस्थित कर मानवीय संबंधों की व्याख्या की है।

(7.1.3) महीप सिंह की कहानियों में कथनोपकथन या संवाद

कथनोपकथन या संवाद नाटक का जैसे महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है, बस वैसे ही कहानी में भी इसका एक विशेष स्थान है 'रावर्ड लिडन' के अनुसार **"**संवाद कहानी का शानदार उदघाटन करने वाले तत्व ही नही है, कहानी सुनाने का वास्तविक साधन है।**"14** एक कहानीकार को संवाद के गठन का भी उचित ध्यान रखना चाहिए। संवाद संक्षिप्त एवं सारगर्भित

होना चाहिए। उबाऊ संवादों पात्रों के अनुकूल व्यावहारिक एवं सार्थक होने चाहिए। महीप सिंह की कहानियों की संवाद योजना खूबज सराहनीय है। वहाँ संवादों पात्रों के अनुकूल प्रयुक्त हुए है तथा पात्रों के मानसिक स्तर पर स्थिति को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। उनकी कहानियों में संवादों के द्वारा पात्र के व्यक्तित्व को भली-भाँति समझा जा सकता है क्योंकि भाषा के सूक्ष्म अन्तर के माध्यम से ही वह पात्र के व्यक्तित्व को रेखांकित कर देते है। डॉ.कमलेश सचदेव ने लिखा है कि - **"**महीप सिंह ने पात्रों के मानसिक स्तर और स्थिति के अनुकूल ही संवादों का प्रयोग किया है। पात्र का धर्म, शिक्षा, रहन-सहन सभी उसकी भाषा को प्रभावित करते है।**"15**

संवाद का विस्तार पात्रों का चरित्र चित्रण एवं शैली को कलात्मकता जैसे अभिव्यक्ति पक्ष के आकर्षण हेतु कहानी में संवादों की भूमिका महत्वपूर्ण समझी जाती है। महीप सिंह ने परिस्थिति के अनुरुप संवादों का सर्जन कर कथानक का मूल संवेदना को उजागर करते है। उन्होंने कहानियों में छोटे-छोटे संवादों से लेकर बहुत बड़े संवादों का भी सहारा लिया है।

'उजाले के उल्लू' कहानी में क्रिश्चियन महिला मिसेज विंटो के संवाद में बम्बइया भाषा का उच्चारण और शैली देखने को मिलती है -

"पू रास्कल, हमारा मकान, छोड़ा अउर हमको अइसा बूल गिआ। तुमकू साला कभी इदर अपना सकल तक दिकाना नही मांगता था ?**"16**

महीप सिंह ने अपनी कहानियों में पात्र के अनुसार संवादों का प्रयोग कर कहानी की सहजता और सम्प्रेषणीयता को बनाये रखा है। एक ही कहानी के लिए किये गये भाषा के सूक्ष्म अंतर के द्वारा दो विभिन्न व्यक्तित्व के दर्शन किए जा सकते है। कहानीकार ने पात्रों के व्यक्तित्व

और मन:स्थिति को दृष्टि में रखकर ही संवादों का प्रयोग किया है उनकी कहानियों में संवाद पात्रों के अनुरूप है छोटे- छोटे तथा सारगर्भित शब्दों में अपनी बात को व्यक्त करते है। साला ('उजाले के उल्लू') उल्लू का पट्ठा ('कटाव') आदी गालियों का भी कही-कही प्रयोग किया गया है।

"पर साला रेस का दीवाना है।"**17**

"यू स्काउंड्रल मुझसे तो उस दिन कहा कि आज दफ्तर में बहुत काम है।"**18**

"कममुंही अब काम कौन करेगा ? और काम नही करेगी तो घर की गुज़र-बसर क्या आसमान से उतरकर तेरा बाप चलाएगा।"**19**

"देख, बुढ़िया ज्यादा बकबक करने की जरुरत नही। मैं कमीने लोगों की आदत तो अच्छी तरह जानता हूँ।"**20**

महीप सिंह की कहानियाँ में महानगर के मध्यवर्ग के वे पात्र आए है जो आम तौर पर सुशिक्षित और नौकरीपेशा है। इस वर्ग की भाषा में अंग्रेजी के शब्द और वाक्य आ जाना सहज होता है। इसलिए महीप सिंह की कहानियों में अंग्रेजी के शब्दों और कही-कही पूरे-पूरे वाक्यों का प्रयोग भी मिलता है -

"आर पू फ्रिजिड ?"**21** ('पति')

"शी इज ए गाडेस ....."**22** ('कील')

"सिट प्रौपरली ..... आई स्स्से।"**23** ('गंध')

"बैचलर्स आर आलवेज इन हरी।"**24** ('पत्नियाँ')

"एम आई नाट फिट टू बी योर वाइफ ?"**25** ('सीधी रेखाओं का वृत')

महीप सिंह कई बार वक्ता की भावनाओं को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए संवादों में शब्दों के बीच बिंदुओं का प्रयोग शब्दों को तोड़कर स्वरों को दीर्घ बनाना और किसी एक वर्ण पर अधिक बल देना जैसे प्रयोग करते है। 'उजाले के उल्लू' में रेसकोर्स में घोड़ो की रेस देखते लोगों की उत्तेजना को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है -

बकअप ..... स्टार आफ इंडिया आ आ आ बक अप अ अप शब्बास ..... गुलमोहर ..... शब्बा आ आस। अबे ..... अबे ..... डेविड ..... भगा ..... भगा बास्सा को। ..... धात् तेरे की ई ई ई।

'कटाव' कहानी में कोष्ठकों का बहुत सार्थक प्रयोग हुआ है। प्राय: ऐसा होता है कि दो व्यक्तियों में बातचीत के साथ-साथ एक भीतरी संवाद भी चल रहा होता है। इस कहानी में महीप सिंह ने एक व्यक्ति के मन में चलते संवादों को कोष्ठकों में रखकर स्थिति की विडंबना को उभारा है। नैरेटर एक पति-पत्नी के साथ बातचीत करते हुए दो स्तरों पर विचार रहा है। उसके भीतरी स्तर पर उभरने वाले संवाद कोष्ठकों में दिए गए हैं .....

"आप क्या करते हैं ? मैंने पूछा।"

"बर्तनो का बिज़नेस है।"**26**

(बर्तनो का बिज़नेस ..... पत्नी बेस्ट एथलीट .....)

मैंने शीला की तरफ देखा -(तुम खुश हो ?)

"सर, कॉलेज का क्या हाल है ?"

"अच्छा है ..... (इतनी सुन्दरता के बावजूद तुम्हारे चेहरे पर रौन क्यों नही है ?)

हम लोग नई बिल्डिंग में जल्दी ही शिफ्ट कर रहे है।**"27**

"आप सारा दिन क्या करती है ?**"** (मुझे उसकी मुस्कराहट बींध रही थी और वह उसी तरह मुस्कुराए जा रही थी)

"कुछ नही।**"28**

(दौड़ना, भाला फेंकना, चक्का फेंकना ..... कुछ भी नही)

'सन्नाटा' कहानी में महीप सिंह ने आपसी संबंधों के बीच बढ़ती हुई दूरी और चरित्र की घुटन को इस तरह दर्शाया है -

"चाय लाऊँ ?"

"किटी कहाँ हैं ?"

"अपने कमरे में सो रही होगी ....."

"तो तुम अपने ही हाल-चाल बताओ।"

"तुम यह भी जानते हो कि मेरी जिन्दगी हाल-चाल की नही, भाग-दौड़ की जिन्दगी है।"

"और भागते हुए आदमी को कदम गिनने की फुरसद नही होती।**"29**

महानगरीय अति-व्यस्तता की वजह से भावशून्य होते निकटतम रिश्ते और अलगाव की अवधारणा को महीप सिंह संवादों के माध्यम से बताते है -

"साल-छमाही कही एक ऐसा दिन आता है।"

"तब कहीं हलका सा महसूस होता है, मेरा कोई परिवार है ..... मैं और किटी माँ-बेटी है।"

"कैसी अजीब बात है। हमारे बीच जब कोई तीसरा व्यक्ति न आए, हमें यह अहसास ही नही होता कि हम माँ-बेटी है। हमें आपस में कोई बात किए हफ्तों गुज़र जाते है। फ्लैट में एक-दूसरे के होने की छाया देखकर हमें बस एक-दूसरे के होने का अहसास होता है।**"30**

इस तरह देखा जाए तो महीप सिंह ने अपनी कहानियों में पात्रानुरुप, भावानुरूप, प्रसंगानुरुप, संक्षिप्त संवादों की रचना कर वास्तविक परिस्थिति में अवगत करवाते है।

(7.1.4) महीप सिंह की कहानियों में देशकाल या वातावरण

देशकाल या वातावरण कहानी का चौथे मूल स्वरूप माना जाता है। इसकी आयोजना कहानी को विश्वसनीय एवं यथार्थात्मक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए की जाती है। कहानी में चित्रित घटनाएँ तथा पात्र-योजना के अनुकूल वातावरण के चित्रण से उसकी सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती है। यदि किसी कहानी में इस तथ्य की उपेक्षा रहती है तो पाठक कहानी की सामाजिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अपरिचित रहता है। कहानी में देशकाल अथवा वातावरण के अंतर्गत उसकी उपयुक्त पृष्ठभूमि के साथ ही सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक आचार-विचार, रहन-सहन तथा रीति-रिवाज़ आदि का भी चित्रण किया जाता है। इसका नियोजन कहानी की कलात्मक पृष्ठभूमि, रचनाकाल घटनात्मक आधार तथा पात्रों के वर्ग और स्तर के अनुकूल किया जाता है।

देशकाल की विशेषताओं के अंतर्गत संक्षिप्तता,वास्तविकता, आलंकारिकता, चित्रात्मकता, वर्णन की सूक्ष्मता तथा तत्वगत संतुलन आदि अत्यंत आवश्यक होते है। कहानी की कथावस्तु का संबंध किसी भी विषय अथवा काल से हो, देशकाल के चित्रण से उसकी पृष्ठभूमि

सुनियोजित हो जाती है। आंचलिक कहानियों को छोड़कर अन्य प्रकार की कहानियों में देशकाल का समावेश आंशिक रुप में होता है। वर्तमान काल में कहानी में वातावरण का सर्वथा स्वाभाविक रुप चित्रित होता है। स्थानीय रंग, लोकतत्व तथा प्रादेशिक विशेषताओं से मुक्त वातावरण विशेष रुप से प्रभाव की सृष्टि करने में सक्षम होता है।

इस दृष्टि से जब हम महीप सिंह की कहानियों की जाँचते - परखते है तो हमें इस बात का पता चलता है कि महीप सिंह की कहानियों में ज्यादातर पारिवारिक माहौल को अंकित किया है। इसी कारण उसकी कहानियों में देशकाल या वातावरण के लिए अधिक संभावाना नही दिखाई देती। महीप सिंह की सारी कहानी नगर या महानगरीय के रुप में देखने को मिलता है। फिर भी उसकी कुछेक कहानियाँ में सफलतापूर्वक देशकाल बताया गया है जैसे कि - 'एकस्ट्रा' कहानी में फिल्मजगत, 'एक स्त्री एक पुरुष' में रेलगाड़ी, 'उजाले के उल्लू' कहानी में समृद्धतट, 'मैडम' कहानी में वेश्याबाजार आदि कहानी का वातावरण है।

इस तरह हम देखते है कि सारी कहानी में महानगर का वातावरण दिखाया गया है, मगर जगह-जगह अलग बताया गया है। लेकिन यह बात भी महत्वपूर्ण है कि उनके कथानक व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। इसी कारण उनकी कहानियाँ का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक तथा विश्वसनीय बन पड़ा है। कभी-कभी तो उनके द्वारा किया गया चित्रण हमारी आँखों के सामने आ जाता है। यही महीप सिंह की कहानियाँ की सफलता का राज है।

(7.1.5) महीप सिंह की कहानियों में भाषा-पक्ष

भाषा कहानी का प्रमुख उपकरण माना जाता है। सामान्य रुप से भाषा ही अभिव्यंजना का माध्यम होती है। एक कहानी में लेखक के अमिष्ट भाव के व्यक्तिकरण के लिए भाषा का होना बहोत ज़रुरी है। कहानी की भाषा का दुरुह होना, उसकी भावात्मक प्रवाहशीलता में बाधा उत्पन्न कर देता है। सरल, स्वाभाविक और सहज तथा मुहावरों, कहावतों के युक्त भाषा कहानी को व्यवहारिक विश्वसनीयता प्रदान करती है। किलष्ट भाषा न केवल कहानी को नीरस बना देती है, बल्कि उससे कहानी की प्रभावात्मकता भी नष्ट हो जाती है। निरर्थक शब्द-योजना, अकलात्मक शब्दाम्बर वाक्य जाल आदि भी कहानी की भाषा को तत्व की दृष्टि से हीन बना देते है।

कहानीकार की सफलता में कथ्य के अनुरूप भाषा का प्रयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कथाकार को कहानी की सफलता के लिए चुस्त, दुरुस्त, प्रवाहात्मक, अलंकारिक, प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक, नाटकीय भाषा का प्रयोग करना होता है। साथ ही साथ उसे इस तथ्य को भी ध्यान में रखना होता है कि वर्तमान में पाठक को कोमलकान्त पदावली से लुभाया नही जा सकता। वह कहानी को उसी भाषा में पढ़ना चाहता है जिस भाषा को वह बोलता है। अपने चारों और सुनता है। अलंकारों और समास युक्त भाषा पाठक को बनावटी लगती है। इसी आधार पर सचेतन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में परिवेशगत परिवर्तन के साथ ही भाषा में भी परिवर्तन किया है। भाषा के इस परिवर्तन को तथा शब्दगत वैशिष्ट्य के अंतर्गत देखा जा सकता है। क्योंकि महीप सिंह सचेतन कहानीकार है उनकी कहानियों इस भाषिक परिवर्तन से भरी पड़ी है। सामान्यतः बोलचाल में ध्वनियों का जो रुप सुनाई देता है उसे ज्यों का त्यों अभिव्यक्त कर महीप सिंह ने सटीक भावाभिव्यक्ति करने का प्रयास

किया है। ऐसा करके उन्होंने कम शब्दों में ही व्यंजकता को बरकारक रखा है।

महीप सिंह उदारवादी विचारधारा के पक्ष में है, इसलिए वे अपने आपको सिख समुदाय का व्यक्ति कहलाने से पहले भारतीय नागरिक कहलाना ही पसंद करते है। "सामान्यतः माना जाता है कि हिन्दी हिंदुओं की भाषा है। आप सिख है। क्या आपको हिन्दी को अपने सृजन का माध्यम बनाने में किसी प्रकार की असुविधा हुई है।"**31** डॉ.हरदयाल की ओर से पूछे गये इस प्रश्न के प्रत्युत्तर में महीप सिंह का विशाल नज़रिया सामने आता है। "सिख होने की असुविधा या कहूँ कि संकट को मैं पिछले पच्चीस वर्षो से लगातार झेल रहा हूँ। यह दुर्भाग्य ही है कि अपने देश में हिन्दी को हिंदुओं के साथ, उर्दू मुसलमानों के साथ और पंजाबी को सिखों के साथ जोड़कर देखने की आदत बन गयी है। मैं समझता हूँ कि हिन्दी को हिंदुओं की भाषा कहना हिन्दी के साथ भयंकर अन्याय करना है।"**32** इस तरह महीप सिंह अपनी कहानियों में भाषा प्रयोग के साथ सामाजिक संबंधों की विसंगतियों को उभारने में विश्वास रखते है।

महीप सिंह ने कथन शैली का अभूतपूर्व विकास कर कथ्य को उभारने का भरसक प्रयास किया है। उन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए बहुत ही सामान्य सी और सरल सी भाषा का चयन कर अपनी बात को आर्थक्षम बनाते है। यह उनकी कहानियों की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उनकी प्रारंभिक कहानी संग्रह में कहानियाँ की भाषा सरल और सचोट लगती है। उनके दूसरे और तीसरे कहानी संग्रह में कहानियाँ में ज्यादातर परिपक्वता और प्रौढता देखने को मिलती है।

"क्षणों से घिरी हुई मोहनी को इन दो अद्वो में से एक का स्पर्श दूसरे से भिन्न लग रहा है।**"33**

"अक्सर वह शीशे के सामने अपने आपको बहुत चुप-चुप देखती रही है ..... बहुत गंभीर होकर। आज उसे लग रहा है, वह मुंह चला-चलाकर, आंखे घुमा- घुमाकर, गर्दन को थोड़ा टेढ़ा करके देखे, अपनी ऐसी बहुत सी बाते देखे जो उसने पहले नही देखी थी।**"34**

यह उदाहरण में भाषा बोलचाल की सरल और संपाट होते हुए भी पात्रों की मानसिकता और परिस्थिति को उजागर करती है।

भाषा को सामान्य प्रयोग ने विचलन करते हुए एक दूसरे के साथ प्रयुक्त न होने वाले विशेषणों, संज्ञाओं और क्रियाओं को एक साथ प्रयोग करके अपनी कहानियों में कई स्थलों पर ताज़गी का अहसास कराया है। इस तरह के प्रयोगों के द्वारा कम शब्दों के इस्तेमाल से शैलीगत विशिषेता है। एक संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले शब्दों जब दूसरों संदर्भ की अर्थ-छापाएं भी साथ ले आते है। जैसे -

"उसके मुह से निकला हुआ 'अच्छा' शब्द चपरासी से दूर नीचे उतरने वाली सीढ़ियों में कही गिर पड़ा था।**"35**

'उजाले के उल्लू' कहानी में ध्वनियों के माध्यम से ही सार्थक एवं सटीक व्यंजना का एक ओर उदाहरण द्वष्टज है **"**वो ओ ओ ओ अपनी फूकती सी आवाज़ में वह ओ को डेढ गज़ खींचकर हँसी वो तो गिल्लू था-मेरा कजिन है पर साला, रेस का दीवाना है। धत् तेरे की ई ई ई ई ..... कुलदीप ने ई ई ई ई को दो गज़ खींचा और डहाका लगाकर बोला, वह तो गिन्नी थी, मेरी कजिन।**"36**

इस उदाहरण के दौर पर कहा जा सकता है कि महीप सिंह ने आवर्तक शिल्प अर्थात् गूँज-अनुगूँज उठाने वाले शब्द, वाक्य खंड और संदर्भ को कहानी में प्रयोग कर कहानी को व्यंजकता एवं सार्थकता प्रदान की है।

साथ ही उन्होंने अपनी कहानियों की भाषा में हिन्दी के अलावा अंग्रेंजी, पंजाबी, हरियाणी, अरबी तथा फारसी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

महानगरीय परिवेश के भीतर रह रहे सुशिक्षित पात्र अंग्रेजी भाषा के शब्द, या पूरी की पूरी बातचीत अंग्रेजी में करते हुए नजर आते है।

अंग्रेजी शब्द

टाई, स्टेशन, प्लेटफ़ॉर्म, स्मार्ट, डायरी, स्लीपर, नोट, इंटरव्यू, रिजर्वेशन, थैंक्यू, ड्राइंगरूम, मैरिज, मेडिकल, लंच, फ़िक्स, टायलेट, लीव, कलंच, रेगुलेटर, कॉलेज, टिप्स, सेल्फ, स्टैण्डर्ड, रिहर्सल, क्लीपबोर्ड, आर्टिस्ट, स्कालरशिप, इंटरेस्टिंग आदि का प्रयोग कही कही जगह पर मिल जाता है।

कई कहानियाँ में संपूर्ण बातचीत भी अंग्रेजी भाषा में नजर आती है -

"एम आई नोट फिट टू बी योर वाइफ ..... एम आई नोट फिट ..... योर ..... वाइफ ..... वाइफ ..... वाइफ सदी ..... आई एम नोट।**"37**

'फोक्स','ब्लाटिंग पेपर' अंग्रेजी भाषा वाले शीर्षक महीप सिंह की कहानियों में दिखाई देते है।

पंजाबी-हरियाणवी शब्द

झस, कहाड प्रसाद, साबे, अकालपुरख, मोख, बीडो, धुर-वाहेगुरू, लेख-संजोग, करन-करावनहार, मूरख, जाणी-जाण, पुरख, ठीपे, सत-श्रीअकाल, जत्थेदार जी आदि शब्द उनकी भाषा में देखने को मिलते है।

आवृतिमूलक शब्द

राशन-पानी, आस-पास, हिसाब-किताब, छेड़-छाड़, उतार-चढ़ाव, खान-पान, चाय-वाई, चुप-चाप, आमने-सामने, अच्छी-ख़ासी, चिन्ता-परेशानियाँ, नहा-धोकर, साग-सब्जी आदि का प्रयोग देखा जाता है।

व्याकरणच्युत शब्द

मुर्ख के लिए मूरख, दर्शन के लिए दरसन, पंचायत के लिए पंचाइत, निर्माण के लिए निरमान, प्रसाद के लिए परसाद, षडयंत्र के लिए खडयंत्र, पुण्य के लिए पुन्न, परमेश्वर के लिए परमेसवर आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है।

ध्वन्यात्मक शब्द

डिंग ..... डिंग..... डिंग ..... , भररर, किररर, टररर, धप ..... धप ..... धप ..... , हा - हा - हा, फफफ ..... फफफ ..... फफफ ..... , टीप - टीप - टीप ..... , टींव ..... टींव ..... टींव ..... , सूं - सां - सां - सां - सां, सरसराना, फूसफूसाना, तडबडब आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

कहावतें

“जो होने को होती है वह होकर रहती है।” (‘फोक्स’)

“शेर की खाल ओढ़कर गधा शेर नही बन जाता।” (‘शास्त्रीजी’)

“जैसी मां वैसी बेटी।” (‘सन्नाटा’)

“घर की मुर्गी दाल बराबर।” (‘पत्नियाँ’)

“महाजन को मूल से सूद ज्यादा प्यारा होता है।” (‘कुछ और कितना’)

मुहावरें

“एक बहुत बढिया मुर्गा है।” (‘कुछ और कितना’)

“उसकी आंखें फटी रह गई।” (‘सीधी रेखाओं का वृत’)

“मां रो-रोकर अंधी हुई जा रही है।” (‘माँ’)

बिम्ब एवं प्रतीक

कहानियों में अनेकायमी अनुभूतियों के चित्रण के लिए लेखक सोचो और संवेदनाओं के आसपास के चित्र तलाश करते है। इस तलाश में उसे इन्सानी चेतना के विस्तार और अवचेतन की गहराई तक की यात्रा करनी पड़ती है। महीप सिंह अपनी कहानियों में जटिल अनुभूतियों को मूर्त करने के लिए जिन बिम्बो एवं प्रतीकों का प्रयोग करते है वे संस्कृति, इतिहास, पुराकथा और दैनन्दिन जीवन के विशाल क्षेत्र से लिए गए है।

बिम्ब और प्रतीक मानव मन के सूक्ष्मतम अनुभवों की जटिलता को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण माना जाता है। महीप सिंह अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए बिम्ब-प्रतीक का सशक्त प्रयोग करते है। ‘उजाले के उल्लू’ कहानी में झूठ-मूठ के प्रेम संबंधों से बंधे प्रेमी उल्लू की तरह अंधेरे में रहकर रोशनी के स्त्रोत की कामना करना, जैसे कथ्य के भीतर एक विचार, एक चिन्तन, एक सृष्टि, एक दृष्टि, पात्रों की मन:स्थिति, परिवेश की जटिलता आदि सूक्ष्मतम स्थितियाँ बिम्ब-निरूपण के सहारे उजागर होती है। 'गंध' कहानी में एक अपरिचित लड़की के बदन से निकलती गंध नरेश को अतीत के खीझ भरे प्रसंग की याद ताज़ा कर देती है। “उसने बापी और झुककर दो-तीन बार सांस को अन्दर की ओर खीचा बिलकुल वही गंध। ..... सांवले रंग से ही ऐसी गंध आती है।

..... और उसके सामने शान्ता उभर आई। ..... उसकी ध्राण शक्ति एका एक तेज़ और सजग हो उठी।**"38** इस तरह महीप सिंह मानवीय संवेदना, स्पर्श, गंध, दृश्य और ध्वनि आदि के बिम्ब बनाकर स्थूल-सूक्ष्म कथ्य को अनुभूतिमूलक बनाते है। जिससे पाठक गहन अनुभूति पाता है और रचनाकार जटिल कथ्य को उदघटित करते समय अनावश्यक विस्तार से बच सकते है।

सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और स्थूल कथ्य को सहज संप्रेषित करने के लिए उचित प्रतिरुप खड़ा करने में प्रतीक होता है। महीप सिंह प्रतीकों के सहारे सिर्फ बाह्य चीज़ो के ही नही बल्कि व्यक्ति की आंतरिक मन:स्थितियों के प्रतिरुप उत्पन्न करते है। 'शोर','कील','उजाले के उल्लू','ब्लाटिंग पेपर' जैसे शीर्षक प्रतीकात्मक स्वरूप में नजर आते है। जो जीवन के भीतर उत्पन्न कटू सत्य के व्यंग्य को उजागर करते है। 'कील' कहानी में मोना का किल परंपरागत रुढ मान्यताओं का प्रतीक है। मोना का अपने कील को खुरचकर निकाल फेंकने की किया में परंपरागत रुढ मान्यताओं से मुक्ति पा लेने की सोच का प्रतीकात्मक अनुबंध देखने लायक है। **"**मोना ने कील खुरचकर फेंक दी है और उस स्थान को मुंह बिचकाकर, गर्दन टेढी करके देख रही है।**"39** इस प्रकार महीप सिंह जटिल अनुभवों की सहज अनुभूति करने हेतु प्रतीकों का प्रयोग कर अपनी शिल्प निरुपण की विद्वता के दर्शन कराते है।

उलझी हुई मन: स्थिति में जब यही समझ में न आ रहा हो कि व्यक्ति अपनी जिन्दगी के किस मुकाम पर खड़ा है, और आगे उसे किस दिशा में जाना है, इस जटिल स्थिति में किंकर्तव्यविमूढ़ बैठे मर्द-औरत की मनोदशा को महीप सिंह ने 'शोर' कहानी में एक अनपहचानी सी चीज के बिम्ब के माध्यम से व्यक्त किया है कि -

"दोनों चुप बैठे थे। दोनों को लग रहा था कोई चीज बड़ी तेजी से इधर से उधर दौड़ रही है। दौड़ती हुई चीज न पकड़ी जा पा रही थी, न पहचानी जा पा रही थी।"**40**

कही-कही महीप सिंह की कहानियों के बिम्ब बहुत काव्यात्मक हो उठे है। ऐसे बिम्ब स्त्री-पुरुष संम्बधों की परतों की अभिव्यक्ति के प्रसंग में ही आए है। जैसे कि -

"दोनों को कुछ याद आया। पीछे छूटे हुए लम्बे रेगिस्तान में कही कुछ चमचमाती सी चीज दिखाई दी बिलकुल दूधिया रोशनी की तरह कुछ चीज झीलमिला रही थी।"**41**

महीप सिंह ने कहानियों की भाषा में उपमानो का खुलकर प्रयोग किया है। ये उपमान आम तौर पर रोज़मर्रा जिन्दगी से लिए गए है। 'कुछ और कितना' कहानी और पत्नियाँ कहानी में देखने को मिला है -

"एक मिसेज मेहता मुझे अनेक होकर दिखाई दे रही थी, जैसे ताश के बावन पत्ते हो, जिन्हें लगातर फेंटा जा रहा हो कभी पान की बेग़म ऊपर आ जाती है, और कभी ईंट की दुक्की, कभी कोई ..... कभी कोई!"**42**

"भरी हुई मशक की तरह उसकी तोंद है जो उसके चलने पर दाएँ-बाएँ हिलती है।"**43**

अत: देखा जाए तो महीप सिंह ने अपने शिल्प विधान में भाषाकीय अभिव्यक्ति में सरलता, सहजता, सपाटता के अलावा अतिबौद्विकता में बिम्ब प्रतीकों के उचित प्रयोग से प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। महीप सिंह परंपरागत रचनाधर्मिता से अलग अपने भाषाकीय नूतन प्रयोग के बलबूते पर जटिल कथ्य को नये तरीके से बताने में सफल रहे है। नूतन

रचनात्मक की वजह से उनकी कहानियाँ कलात्मक निस्संगता के लिए प्रसिद्ध है।

(7.1.6) महीप सिंह की कहानियों में शैली-तत्व

जीवन संदर्भो की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए यदि भाषा एक माध्यम है तो उसके प्रस्तुतिकरण के लिए शैली। शैली तत्व कहानी संरचना की वह रीति है जो कहानी के कथ्य, पात्र, संवाद, परिवेश आदि तत्वों का संयोजन कर कहानी विधा को साकार स्वरूप प्रदान करती है। "अध्ययन की दृष्टि से शैली तत्व के अन्तगर्त भाषा शैली कहानीकार के मनोभावों की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन है। अमुक कहानी सरल और सुबोध शैली में है तथा अमुक कहानी गुढ अस्पष्ट और दुबोध शैली में है।"**44** प्रभावात्मक सम्प्रेषण के लिए कहानीकार जिन विधियों का प्रयोग करता है वे ही रचना शैली भिन्न-भिन्न रुप है। कहानी को प्रभावी बनाने के लिए एक अनुभवी कहानीकार काव्यात्मक, वर्णनात्मक, कथात्मक, आत्मकथात्मक, आत्म- चरित्रात्मक, कल्पनात्मक, डायरी, पत्र, संस्मरण आदि शैलियों का प्रयोग करता है। कभी उसे अपने कथ्य के प्रभावी सम्प्रेषण के लिए नाटकीय ढंग की अपेक्षा होती है तो कभी संवादात्मक, लोककथात्मक, आंचलिक या स्वप्न शैली की। इस तरह यह कहा जा सकता है कि कहानी और उसके तत्वों को रुचायित करने का पूरा-पूरा उत्तरदायित्व शैली तत्व पर है।

महीप सिंह ने अपनी कहानियों में शैली तत्व विविधता के साथ उभारा है, क्योंकि उन्होंने अपनी कहानियों की विषयवस्तु और अनुभूति पक्ष को ध्यान में रखकर उचित शैली का प्रयोग किया है।

फ्लैश बैक शैली

जब किसी रचना में घटना को बीच के किसी बिन्दु से उठाकर अतीत की स्मृति के सहारे आगे बढ़ाकर समापन की ओर ले जाया जाता है, तो उसे शैली का फ्लैश बैक रुप कहा जाता है। शैली के इस रुप को पूर्वदीप्ति रुप भी कहते है। महीप सिंह की अधिकांश कहानियाँ घटना विन्यास की दृष्टि से बीच के किसी बिन्दु से प्रारंभ होती है और अतीत की घटनाओं को स्मृति या पूर्वदीप्ति फ्लैश बैक के रुप में साथ लेते हुए आगे बढ़ती है। फ्लैश बैक दो समय बिंदुओं को विभिन्न स्थितियों में प्रस्तुत करता है - कभी वर्तमान और अतीत परस्पर विरोध दिखाई देते है, कभी एक दूसरे को गहराते हुए तो कभी एक दूसरे में गुंथे एक नया अनुभव रचते हुए कहानी को संधनता प्रदान करते है। इसके अतिरिक्त फ्लैश बैक लेखक को साधना उसके लिए अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। फ्लैश बैक एक नितान्त सपाट कहानी को भी कुछ हद तक रोचक बना देता है, इसलिए आम तौर पर लेखक बिना किसी विशेष प्रयोजन के भी फ्लैश बैक का प्रयोग करते है।

महीप सिंह की कहानियों में पूर्वदीप्ति के प्रयोग से सरल और सपाट कथ्य भी रोचकता प्राप्त करते है। महीप सिंह के कहानियों का प्रारंभ सामान्यतः उस बिन्दु से किया है जहां समतल बहते जीवन में कुछ व्याधात उत्पन्न होता है। उन्होंने कुछ कहानियों की पंक्तियों के द्वारा प्रारंभ में ही फ्लैश बैक दिखाई देता है जैसे कि - **"**इसी तरह एक बार वह पांच-एक साल पहले भी अचकचाया था पर उस समय वह इतना भौंचक्का नही हुआ था।**"45** और इसके बाद वे अतीत को साथ लेते हुए इस शुरुआत के बिन्दु से आगे निकल जाते है। कभी-कभी उन्होंने इस प्रारंभिक व्याधातक बिन्दु को किसी पुरानी घटना की प्रस्तुति का माध्यम भी बनाया है, जैसे 'गंध' कहानी में सिनेमा हाल में पास की सीट पर बैठी

लड़की की देह की गंध से नायक को अपना एक अनुभव याद हो जाता है और कहानी उसी अनुभव की प्रस्तुति बन जाता है।

'धूप की उंगलियों के निशान' कहानी में अतीत वर्तमान के साथ इस तरह गुंथा हुआ चल रहा है कि वर्तमान एक संश्लिष्ट अनुभव में रुपांतरित हो गया है। इसमें तलाक़शुदा पति-पत्नी वर्षों बाद अचानक मिल जाते है। पति दूसरे शहर से एक दिन के लिए ओफिस के काम से दिल्ली आया है। पत्नी आग्रह करके उसे अपने ही फ्लैट में ठहरा लेती है। वह एक अच्छे मेजबान की तरह उसका पूरा ध्यान भी रखती है। बाह्य रुप से पति भी सामान्य रहता है पर उसके भीतर अतीत की यादों का शोर उभरता रहता है। वह पूर्व पत्नी से सामान्य शिष्टाचार की बाते करते अतीत की दृश्यावलियों से भीतर ही भीतर गुज़रते और अपने वर्तमान को अतीत के संदर्भ में तौलते हुए एक अत्यंत संश्लिष्ट अनुभव से गुजरता है। फ्लैश बैक ने अनुभव की संश्लिष्टता को संभव बनाया है। अतीत और वर्तमान के एक रेखा में चित्रण से अनुभव का एकायामी रुप ही उभर पाता है। उनकी मुलाकात में पहचान के उभरने के पहले क्षण से ही अतीत और वर्तमान का परस्पर संधात आरंभ हो जाता है जब पत्नी की परस्पर संधात आरंभ हो जाता है जब पत्नी की समझ में नही आता कि वह उससे बात करे या न करें -

"औरत ने भी उसे देखा। उसकी आंखों पर धूप का काला चश्मा चढ़ा हुआ था, फिर भी उसे लगा जैसे औरत की आंखें एकाएक टिमटिमाने लगी है और चेहरे पर ऐसी लकीरें उभर आई है, जो पहचानना भी चाहती है और अनपहचाना भी रहने देना चाहती थी।**"46**

इस तरह अचानक मुलाकात में वह पति का कभी उसे 'आप' तो कभी तुम कहना भी इस अतीत की पृष्ठभूमि का ही प्रतिफल है। उसके

शरीर की ओर नजर जाने पर उभरती प्रतिक्रिया - "वह शरीर जिसकी हर नीली नस को वह अपनी हथेलियों पर आज भी महसूस कर सकता है।"**47** बस में बैठने पर एक भूली बरसी परन्तु बहुत परिचित गंध दोनों के बीच तीर आई। फिर फ्लैट में आकर आराम करने के दौरान उसके साथ बिताए जीवन की यादें वर्तमान पत्नी के साथ बिताए, जीवन का अहसास और पूर्व पत्नी के इस संक्षिप्त साथ की अनुभूति उसे एक अजीब से शोर में शेर देती है। कहानी के अंत में सवेरे बस स्टॉप पर विदा लेते समय वह आज भी उसी दर्पभरी पूर्व पत्नी के समक्ष दिखाई देता है - "अच्छा ! वह चलने के लिए हुआ तो ठिठक गया, नीता ने आंखों पर चश्मा चढ़ा लिया था। उसने धन्यवाद कहना चाहा परन्तु उसे यह पता नही लग रहा था कि नीता की आंखों का रंग कैसा है। उसे सिर्फ उसके होठ दिखाई दे रहे थे जो जुडे थे जिनमें कोई हरकत नही थी, जिनसे कुछ भी फूटता नही दिखाई दे रहा था।"**48**

हम देख सकते है कि यह कहानी में निहित अतीत और वर्तमान सामने तटस्थ खड़ी नीता में समाहित हो गए है।

किस्सागोई शैली

महीप सिंह की कहानियों में किस्सागोई शैली भी शिल्प की विशेषताओं में से एक देखने को मिलती है। उनके शिल्पकार का जो पक्ष पकड़ में नही आता लेकिन उनकी रोचक और धैर्यपूर्ण रचना शैली में बसा हुआ है, वह है उनका किस्सागोई का रुझान। "आम तौर पर उनकी किस्सागोई को कहानियों के परिवेश और ब्यौरों के बयान में ही देखा जा सकता है, लेकिन कुछ कहानियों में यह सहज ही पहचान में आ जाती है।"**49**

कभी-कभी कहानियों के बीच में लम्बे-लम्बे कथनों या बिम्बों से अपनी बात स्पष्ट करने का प्रयास करते है। ऐसे स्थलों पर भी उनकी किस्सागोई की प्रवृत्ति सक्रिय दिखाई देती है। 'विगत का डर' कहानी में रात के समय स्टेशन के वेटिंग रूम में अकेली नायिका पर एक-एक पल भारी गुज़र रहा है। वह इसे इस प्रकार कहते है कि - **"**वह पढ रही थी। मन ही मन उसने निश्चय कर लिया था कि अब वह इधर-उधर नही देखेगी, बस पड़ती ही रहेगी। पढेगी नही तो समय कैसे कटेगा ? और समय भी कितना विचित्र है ! कभी तो हिरण की तरह चौकडियां भरता निकल जाता है और कभी कीड़े की तरह सरकता भी नही। कभी व्यक्ति को अपनी गोद में बैठाकर हवा में उड़ता है कभी उसकी गोद में बैठकर न खुद चलता है न उसे चलने देता है।**"50**

इसी तरह 'पति' कहानी में पति-पत्नी के संम्बधों के घिसटते चलने को वे एक लम्बे कथन-हालांकि बिम्बात्मक के माध्यम से व्यक्त करते है - **"**लेकिन सब कुछ चलता रहा। जिनके पैरों में स्केट्स लगे होते है वे भी चलते है। इसके बिना भी लोग मीलो की दौड़ लगाते है। कुछ लोग लडखडाते हुए चलते है और आभास देते है कि अब गिरे ..... बस अब गिरे।**"51**

'लोग' कहानी में भी जहां नैरेटर एक रेलयात्रा के दौरान दो पति-पत्नी के जोड़ों के विषय में सोच रहा होता है जिनके सम्बन्ध टूट-बिखर गए है। ऐसे में उसे सामरसेट माल के माता-पिता के आपसी सामंजस्य का ध्यान आता है। **"**जिसके विरुद्ध कभी-कभी तो मेरा रोम-रोम विद्रोह कर उठा है। परन्तु में उसे निभाता रहा हूँ दस-बारह वर्ष तो हो ही गए है, मैं इसे निभाए चला जा रहा हूँ। मुझे भरोसा है कि कुछ और वर्ष में इसी तरह निभाए जाऊँगा।**"52**

कहानी में यह प्रथम संवाद के बाद उसके मित्र का इतना ही लम्बा संवाद है और उसके बाद नैरेटर पूरी कहानी में किस्सागोई की शैली में बयान करता चला जाता है। "मैं 'माम' की मा के बारे में पढ रहा हूँ। माम की मां बहुत सुन्दर थी परन्तु उसका पिता उतना ही बदसूरत था। उसके मां-बाप के जोडे को उन दिनों पेरिस में 'सौदर्य और पशुत्व का जोड़ा' कहा जाता था। माम ने लिखा एक बार मेरी मां से उसकी एक सहेली ने पूछा" तुम इतनी सुन्दर हो, और कितने ही लोग तुम से प्रेम करते है, फिर भी तुम उस बदसूरत और छोटे आदमी के प्रति इतनी वफ़ादार क्यों हो ?" मां का उत्तर था - **"**वह मेरी भावनाओं को कभी ठेस नही पहुंचाता।**"53**

महीप सिंह की कहानियों में किस्सागोई के प्रति रुझान के कारण अधिक कहानीयन और रचाव उत्पन्न हुआ है।

आत्म-कथात्मक शैली

लेखक के अनुभव क्षेत्र से निकट का दायरा आत्म-कथात्मक शैली रहता है। आत्म-कथात्मक शैली अधिक कारगर तब होती है, जब उसमें वैयक्तिक अनुभव, अनुभूति, संवेदना, चित्तन आदि होना आवश्यक होता है। महीप सिंह आत्म- कथात्मक शैली के पक्ष में अपने विचार लिखते है कि - **"**आत्म कथात्मक लेखन तो फिर भी कथा है जिसमें कहानी का नैरेटर कहानी लेखक से बहुत अलग हो सकता है। आत्मकथा 'मैं' से ही शुरू होती है। आत्मकथा का सबसे बड़ा संकट यह है कि मैं अपने आपको कितनी निर्ममता से छील सकता है।**"54** महानगरीय जीवन की आपाधापी, संबंधों का विघटन, व्यस्त जीवन की व्याकुलता, अकेलापन, ऊब, कुंठा आदि के यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए महीप सिंह ने आत्मकथात्मक शैली को उचित माना है। 'सन्नाटा','कटाव','ब्लाटिंग

पेपर','एक लड़की शोभा' आदि कहानियों में महीप सिंह ने आत्म कथात्मक शैली का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए देखे तो हम जैसे कि - 'सन्नाटा' कहानी में "कैसी अजीब बात है। हमारे बीच जब तक कोई तीसरा व्यक्ति न आए हमें यह अहसास ही नही होता कि हम माँ-बेटी है। हमें आपस में कोई बात किए हफ्तों गुज़र जाते है। फ्लैट में एक-दूसरे की छाया देखकर हमें बस एक-दूसरे के होने का अहसास होता है। अलग-अलग कमरे, अलग-अलग बाथरूम यहां तक कि टूथपेस्ट भी अलग-अलग।"**55** 'ब्लाटिंग पेपर' कहानी में "मुझे याद आया। इस वर्ष कॉलेज के केमिस्ट्री विभाग में एक नया प्रोफेसर आया था-अरोरा। कल स्टाफ रुम में मेरा उससे परिचय हुआ था। फिर काफी देर बैठे हम लोग गप-शप करते रहे थे।"**56** 'कटाव' कहानी में "ओह..... स्टुडेंट ..... ? - सारी बेपरवाही और सैलानीपन को छोड़कर मेरे अंदर का अध्यापक बाहर निकलने को मजबूर हो उठा। एक अध्यायकीय मुस्कुराहट के साथ मैंने उस कमरे में फिर प्रवेश किया।"**57**

इस प्रकार कहानीकार महीप सिंह अपने व्यक्तिगत अनुभवों के सहारे महानगरीय विसंगतियों के बीच जूझते मनुष्य की प्रतिक्रिया को आत्म-कथात्मक शैली के सहारे कहानी में व्यक्त करते है। उन्होंने अपने निजी संघर्ष को जीवन का अपनी कहानियों में आत्म-कथात्मक शैली में प्रस्तुत कर अपने निजी संघर्ष से लोगों का अनुभूत करवाना चाहते है।

डायरी और पत्रात्मक शैली

मनुष्य की व्यक्तिगत अतीत की खास घटनाओं या बातों को डायरी संग्रह करती है। डायरी में संग्रहित अतीत के प्रसंग व्यक्ति को वर्तमान एवं भविष्य की उचित योजनाओं के लिए उपकारक सिद्ध होती है। महीप सिंह के कहानी के कही पात्र भी कहीं-कहीं अपने जीवन के

भावात्मक प्रसंगो को डायरी में लिखते नजर आते है। महीप सिंह की 'झूठ','कील','ब्लाटिंग पेपर','काला बाप गोरा बाप' आदि कहानियाँ में पत्रात्मक शैली के उदाहरण मिलते है।

'झूठ' कहानी में आरुप अपने बड़े भाई बलदेव को लिखता है - **"**उस दिन शाम को आरुप अपने सामने के दीवान पर पैर फैलाए आराम कुर्सी पर बैठा हुआ क्लिपबोर्ड पर कागज़ लगाकर पत्र लिख रहा था।**"58** कहानी 'किल' में मोना की मम्मी ने उसको अपने बर्थ डे पर पत्र भेजती है उसके कुछ अंश इस तरह है - मम्मी का पत्र भी सुबह की डाक में मिला। उन्होंने भी उसके बर्थ डे का जिक्र किया है। पर ऐसे, जैसे वे उसे बस कनखियों से देखकर निकल जाना चाहती है। पत्र के शेष भाग में उन्होंने वही सब कुछ लिखा है जो वह चाहती है कि मम्मी लिखे अधिक विस्तार से लिखे। पर विस्तार से लिखी हुई बात को पढ़कर मोना खीझ उठती है। एक कड़वाहट उसकी रग-रग में करेंट की तरह गुजरने लगती है। मम्मी लिखती है - **"**मोना, अब और ज्यादा रुकना ठीक नही। हर बात की एक उम्र होती है। फिर लड़की तो एक ऐसा फूल है कि अपनी डाल पर लगे-लगे मुरझा जाता है और अगर उसे तोड़कर किसी के कोट पर लगा दिया जाए तो उसकी ताज़गी खत्म होने में ही नही आती। अब तुम्हें फैसला कर ही लेना चाहिए। मुझे तुम्हारे डैडी की बात अब तो बिलकुल समझ में नही आती। यह ठीक है कि तुम लाखों में एक हो। परन्तु अब ऐसा लड़का जो तुम्हारे डैडी को भी पसंद हो और तुम्हें भी पसंद हो, कहां से ढूंढा जाएगा और आखिर कब तक चलती रहेगी यह ढुंढाई। मेरे ख्याल में सुरेश सब तरह से तुम्हारे काबिल है। वह तुम्हें चाहता भी बहुत है, और तुम्हारी कितनी इज़्ज़त करता है ……**"59** 'ब्लाटिंग पेपर' कहानी में प्रीति अपने प्रेमिओं से मिली अवहेलना का संदर्भ डायरी में लिखती है कि - **"**आपने एक बार मेरी डायरी में पढा था मेरी इच्छा है कि मैं किसी अच्छा

काम कर जाऊँगी। मुझे प्यार चाहिए। वह दे भी सकेगा सब पूरा का पूरा, एकचित ..... यह बात मैं अभी तक भूली नही हूँ। भूल भी नही पाती रह- रहकर यह बात ताजी हो जाती है।**"60** इस घटना में प्रीति के मानसिक तनाव की अभिव्यक्ति सशक्त रुप में हुई है। 'काला बाप गोरा बाप' कहानी में जमीला ने अपने पूर्व पति को लिखे पत्र का अंश है कि - **"**समझ में नही आता कि तुम्हारे लिए क्या लिखकर खत का आगाज करुं। तुमने 'मेरी जमीला' लिखा है। एक जमाना था जब तुम 'मेरी जमीला' लिखते थे और में जवाब में 'मेरे सिरताज' लिखा करती थी।**"61** इस पत्र के माध्यम से बदलती मान्यताओं के बीच जमीला की सोच में आया बदलाव देखने को मिलता है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि डायरी शैली का प्रयोग सिर्फ अतीत के प्रसंगो को निरुपित ही नही करता बल्कि मानसिक तनाव को भी अभिव्यक्त करता है। पत्रात्मक शैली के माध्यम से महीप सिंह व्यवहारिकता एवं नैतिक मूल्यों को भी स्पष्ट करते है।

टेलिफोन वार्ता शैली

भौगोलिक दृष्टि से जब बात करनेवाले दो पक्ष काफी दूर होते है तब टेलिफोनिक बातचीत होती है। मनुष्य के जीवन में आज के समय में व्यस्तता के कारण टेलिफोन वार्ता का माध्यम से समय की बचत एवं परोक्ष रूप से आवश्यकताओं की पूर्ति करवाता है। बदलती संवेदना, बदलती तकनीक, बदलती परिस्थिति एवं बदलते साहित्य स्वरूप के साथ अभिव्यक्ति पक्ष के नये मापदंड की तलाश के रुप में टेलिफोनिक वार्ता शैली का स्वीकार हुआ है। महीप सिंह ने टेलिफोनिक वार्ता शैली का अपनी कहानियों में नवीनत प्रयोग करते हमें देखने को मिलता है। 'कुछ और कितना','पति','उजाले के उल्लू' कहानियों के पात्र टेलिफोनिक

बातचीत के सहारे व्यवहार करते हुए मालूम होते है। 'कुछ और कितना' कहानी में मिसेज मेहता बात करती है कि - **"**ओपरेटर ने कहा था - 'आप से कोई मिसेज मेहता बात करना चाहती है।' कौन मिसेज मेहता - सोचने में मुझे कुछ पल लगे थे और तभी मुझे टेलिफोन पर वह लरजती आवाज़ सुनाई दी थी - "मैं बोल रही हूँ।" फिर वही बातें - कब आना हुआ ? कब तक हो ? और आखिर में शाम को मिलने का वायदा ....."**62** इस तरह दोनों में बात होती है और आपस में मिलने का नक्की होता है। 'पति' कहानी में टेलिफोन में बात-चीत कहानी के शुरुआत में ही बताई गई है -

"फोन की घंटी बजी तो मेहता बड़े आलस भाव से उठा।"

"हैलो ..... कर्नल मेहता हियर।"

उधर से आवाज़ आई - "कर्नल साहब बोल रहे है ? आदाब ..... अंसारी अर्ज कर रहा हूँ।"

"कैसे हैं अंसारी साहब ..... आपकी समाज सेवा कैसी चल रही है ?"

"हुजूर हम क्या करेंगे समाज सेवा। हम तो मालती जी के पिछलगुपा है ..... वो जैसा हुकम देती है, हम वैसा ही करते है।"

कर्नल मेहता को बड़ा लिजलिजापन महसूस हुआ। इतनी सलीकेदार ज़ुबान सुनकर उन्हें महसूस होता है, जैसे किसी ने उसके कानों में सरसों का तेल डाल दिया है जो दोनों कानों से छूता हुआ उसकी गर्दन तक आ जाता है।

"आप मालती से बात करना चाहते है ?

"जी हुजूर .....।"

“वो शिमला गई है ..... वहां कोई सेमिनार था ..... कब लौटेगी मुझे पता नही।”

मेहता बात खत्म करना चाहता था। उसने चोंगा रख दिया।**”63** इस तरह कर्नल साहब को बात करना पसंद नही होता है तो वह टेलिफोन को रख देते है।

‘उजाले के उल्लू’ कहानी में तोष और कुलदीप टेलिफोन पर लंबी बातचीत करते हुए परस्पर की ग़लतफ़हमी को दूर करते है। एक दिन उसने उसे फोन पर पकड़ ही लिया - **“**हलो ..... तोष ..... भई कमाल है ..... इतने दिन से तुम्हारी कोई खबर नही ..... और यहां हम हैं कि अपने कानों को टेलिफोन के रिसीवर से बांधे घूम रहे है कि कब तुम्हारी प्यारी आवाज़ सुनाई दे ..... क्या कहा ..... मैं तुम पर विश्वास नही करता ..... अच्छा जी ..... तो मैडम उस दिन की बात का बुरा माने बैठी है ..... अरे छोडो भी ..... उस दिन मैं ज़रा दार्शनिक मूड में आ गया था ..... आई एम वेरी सोरी तोष ..... प्लीज फारगेट दैट ..... सच तोष ..... इतने दिन से तुम मिली नही ..... मेरा बुरा हाल है ..... सच बहुत बुरा ..... कब मिल रही हो ..... अरे भई, अब माफ़ भी कर दो न ..... कल ..... ? नही आज ..... आज शाम को ..... कल का इंतजार कौन करे ..... दादर स्टेशन पर ? ठीक है ..... बुक स्टोल के पास ..... छह बजे ..... ठीक छह बजे ..... अच्छी बात है ..... मैं पहुंच जाऊँगा।**”64**

इस तरह आधुनिकता के प्रति सर्तकता को सूचित करने के लिए महीप सिंह ने अपनी कई कहानियों में टेलिफोनिक वार्ता शैली का नूतन प्रयोग उन्होंने दिखाया है।

एकालाप शैली

महीप सिंह की सहज दिखती कहानियों में एक बहुत सर्तक शैलीकार सक्रिय है जो निरंतर अपने शैलीगत ढांचे को तोड़ता रहता है। प्रत्येक कहानी अपने अलग कथ्य के साथ ही विशिष्ट शिल्प भी लेकर आती है लेकिन अधिकांशत: शिल्प की विशिष्टता उनकी कहानियों में इस रुप में उभरकर नही आती कि रचना केवल शिल्पगत चमत्कार प्रतीत होने लगे। उनकी कुछ कहानियों में शैलीगत प्रयोग अवश्य रेखांकित किए जा सकते है।

महीप सिंह की कई कहानियों में एकालाप शैली देखने को मिलती है। 'सन्नाटा' कहानी में दिवा नामक व्यक्ति अपने आप अकेला संवाद करता है। जैसे कि - **"**वह बेड पर बैठकर कमरे की एक-एक चीज को घूरने लगा। टेलिविज़न, रेडियो-ग्राम, डाइनिंग टेबल, सोफा-सेट, सब निर्जीव चीज़े अपनी अपनी जगह पर रखी हुई थी। किसी को एक दूसरे से कोई मतलब नही था। वह सोचने लगा, क्या इस कमरे में इन चीजों की पोजीशन को बदला जा सकता है। डाइनिंग टेबल वहां न रखकर उस दीवार के साथ रख दिया जाए तो कैसा रहे ? सोफा-सेट उधर रखा जा सकता है। दीवान उधर खिसकाया जा सकता है। टेलिविजन ..... ? वह कमरे में इधर-उधर देखने लगा। फिर उसे लगा वह जहां रखा है वही ठीक है। फिर उसे लगा जो चीज जहां रखी है वही ठीक है।**"65** इस तरह यह कहानी में दिवा अपने दोस्त के घर के सभी चीजों को अलग-अलग जगह रखने के बारे में अपने-आप ही बात करता है।

'धुप की उंगलियों के निशान' कहानी में अपनी पत्नी के साथ तलाक लेने के बाद जब वह फिर से उसके साथ रात को रुकता है तब वह अपनी पुरानी यादों में रोते-रोते चला जाता है जैसे कि - **"**वह लेट गया। पता नही कितनी गड्डमड्ड स्मृतियाँ उसे मथ रही थी। शादी के पहले दिन से ही उसे लगा था, सब कुछ वैसा नही था जैसा उसने सोचा

था। उसे लगा था, नीता में कुछ अजीब तरह का दर्प है। जब वह नही कहती है तो उसका अर्थ नही होता है। और वह हां कभी नहीं कहती। उसका नही न कहना ही हां होता है। हां के क्षणों में भी वह उन्मुक्त नही होती। पता नही, कौन सी छाया उसे घेरे रहती है, ढके रहती है जिससे वह बाहर नही निकलती। उसे लगा था, नीता बहुत कम हंसती है। वह बस मुस्काराती है। उसकी मुस्कराहट में भी गर्व-गुमान सा झरता है।**"66**

महीप सिंह की 'कील' कहानी में मोना नाम की लड़की शीशे के सामने खड़ी होकर अपने आप से संवाद करती है - **"**वह फिर शीशे के सामने आ खड़ी हुई है। उसे लगता है, वह बहुत सुन्दर है ..... वह अभी भी बहुत सुन्दर है। थोडा इससे कम भी सुन्दर होती तो कोई हर्ज़ नही था। उसे लगता है वह बहुत स्वस्थ है। कभी बीमार ही नही पड़ती। ऐसी भी क्या तन्दुरूस्ती कि आदमी कभी बीमार ही न पड़े। डैडी बीमार रहते हैं, वह उनकी तीमारदारी करती है। पीछले सात-आठ साल से वह लगातर डैडी के साथ जुडी हुई है। बी.ए के बाद उसका कितना मन था कि वह म्यूजिक में एम.ए. करे। उसने एम.ए. ज्वाइन भी कर लिया था, पर बीच में ही छोड़ना पड़ा। तब से बस एक ही काम है - डैडी के साथ रहना। उनके साथ बम्बई, दिल्ली और नैनीताल के बीच झूलते रहना।**"67**

इस तरह महीप सिंह की 'सन्नाटा','धुप की ऊँगलियों के निशान','कील' कहानियों के पात्र को सीधे पाठक के समक्ष उपस्थित करती है, हालांकि इसमें पात्र संवाद के रूप में नही बल्कि एक मार्गदर्शक के रुप में स्वीकार किए गए व्यक्ति को लिखे गए पात्रों के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करता है।

वर्णनात्मक शैली

ज्यादातर कहानियों में महीप सिंह ने वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत की है। कहानी की घटना, परिस्थिति, पात्र की मानसिकता, क्रिया-कलाप आदि को वर्णनात्मक शैली के आधार पर उजागर किया है। यहाँ पर हम कुछ प्रभावोत्वादक उदाहरण देखते है -

"लो सुनो ..... वह पत्र मैंने बलदेव भैया को लिखा था ..... रुको रुको ..... अपना शक जाहिर करने से पहले मेरी एक बात सुन लो। तुम यही कहने जा रही हो न कि बलदेव भैया को लिखे पत्र को मुझसे छिपाने की क्या जरूरत थी ? पर वह बात ऐसी ही थी जिसे छिपाने की जरूरत पड़ी। वैसे तो वह बात मुझे अभी भी नही बतानी चाहिए। यह दो भाइयों के बीच का ऐसा रहस्य है जो किसी तीसरे पर नही प्रकट होना चाहिए। पर मैं यह भी अच्छी तरह जानता हूँ कि शक का जो कीडा तुम्हारे दिमाग में घुसकर तुम्हें इस तरह छटपटाने के लिए मजबूर कर रहा है, वह बिना यह बात बताए निकलने वाला नही है।**"68** ('झूठ' कहानी)

"भगवान कसम झूठ नही बोलती। पता नही आज क्या हो गया था आनन्द को कि बस मुझे छोड़ता ही नही था। डान्स डायरेक्टर दो स्टेप लेने को कहता तो वह मेरी कमर में हाथ डाले बस नाचता ही रहता और उधर डायरेक्टर बाकी लड़कियों को उनके स्टेप समझाता तो आनन्द ऐसे, जैसे किसी नशे में झूम रहा हो, मेरे पास खिंचा चला आता और बोलता आ छोकरी, ज़रा डान्सर करे। भगवान कसम मारे शर्म के मेरी तो जान ही निकल जाती और वो कमबखत बिना किसी की परवाह किए मेरी कमर में हाथ डालकर नाचने लगता ..... सच कहती हूँ चंदा, मैं तो पसीना-पसीना हो रही थी।**"69** ('परवरिश के लिए' कहानी)

"उसने बासी ओर झुककर दो-तीन बार तेजी से सांस को अन्दर की ओर खीचा बिलकुल वही ..... बिलकुल वही गंध। उसने साथ बैठी लड़की को उस अंधेरे में कनखियों से देखने की कोशिश की। और जो कुछ वह देख सका, वह उस गंध जैसा ही था। लड़की का रंग सांवला था। सांवले रंग से ही ऐसी गंध आती है। लड़की उत्तर भारत की नही लग रही थी। लड़की के शरीर में मांसलता नही थी ..... और उसके सामने शान्ता उभर आई। उसमें मांसलता नही थी या पुष्ट मांसपेशियों का खिंचाव। चमड़ी पर खूब चिकनाहट कसावट कही कोई अतिरिक्त मांस की लटक नही।"**70** ('गंध' कहानी)

इस तरह महीप सिंह की वर्णनात्मक शैली में विषयवस्तु और अनुभूति पक्ष को ध्यान में रखकर उचित शैली का प्रयोग किया है।

(7.1.7) महीप सिंह की कहानियों में उद्देश्य

हर एक कहानीकार का कहानी लिखने के पीछे कोई -न- कोई उद्देश्य तो होता है। प्राचीन काल में सिर्फ मनोरंजन के लिए कहानियाँ लिखी जाती थी लेकिन अब इतना ही उद्देश्य नही होता। प्राचीन काल में सिर्फ मनोरंजन के लिए कहानियाँ लिखी जाती थी लेकिन अब इतना ही उद्देश्य नहीं होता। आजकल की कहानियाँ लिखने के पीछे समस्या का चित्रण लोगों को जागृत करना आदि जैसे कई उद्देश्य भी हो सकते है। मनोरंजन, हास्यसृष्टि, उपदेशात्मकता, सुधार भावना, राजनीतिक उद्देश्य, यथार्थ चित्रण, मनोवैज्ञानिकता प्रचारवाद आदि कई उद्देश्य कहानी लिखने के पीछे उद्देश्य हो सकते है। बिना उद्देश्य तो कहानी हो या उद्देश्य एक बीज का कार्य करता है। बीज जितना शक्तिशाली हो वृक्ष उतना ही मजबूत बनता है उसी तरह जीवन दर्शन या उद्देश्य का महत्व कहानी में है।

महीप सिंह की कहानियाँ भी सिर्फ मनोरंजन मात्र के लिए लिखी नही गयी है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं को अधिक मात्रा में उठाया है और नारी को उन समस्याओं के प्रति आकृष्ट करना उनका उद्देश्य रहा है। इसके साथ उन्होंने मानवी के आपसी संबंधों को बहोत अच्छी तरह दिखाया है। जैसे की पारिवारिक संबंध में माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन, देवर-भाभी, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री के संबंध है। सामाजिक संबंध में मित्र, गुरु, शिष्य व कामकाजी सहयोगियों के बीच के संबंध है। ज्यादातर उन्होंने स्त्री-पुरुष के संबंध दिखा`1या है जैसे कि पति-पत्नी तलाक़शुदा, पति-पत्नी विवाहपूर्व और विवाहोत्तर संबंध बताया है। उन्होंने नाम-अनाम संबंध सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रति सचेतन दृष्टि की है। कहानियाँ में यही संबंधों के द्वारा लोगों का ध्यान खींचना भी उनका उद्देश्य रहा है और अपने उदेश्यतक अपनी कहानियों को पहुँचाने में महीप सिंह जी सफल रहें है।

*** निष्कर्ष**

निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि महीप सिंह की कहानियों का शिल्प पक्ष परिवर्तित समय के अनुसार नूतन प्रयोगों का साथ नया स्वरूप धारण करता है। उन्होंने कथा शिल्प उनकी वैचारिक दृष्टि का अनुसरण भी करता है और अभिव्यंजना भी। जीवन की जटिलता संश्लिष्टता तथा तेजी से बदलते परिदृश्य में संक्रान्त मन: स्थिति की पीड़ा को झेलने और उसमें सहज होकर जीने की जो बात वे वैचारिक स्तर पर कहते है, उनकी कहानियों की भाषा और शैली में भी वही सहजता झलकती है। उन्होंने भाषा में सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिए बिम्बो एवं प्रतीकों का प्रयोग किया है जटिल जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए भावों में ऐसे अपमानो का भी प्रयोग किया है जो हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देते है। सामाजिक जीवन बोघ

को रुपायित करने के लिए उन्होंने अपनी कहानियों में पात्रानुरुप संवाद सहज सांकेतिक प्रतिकात्मक एवं पूर्वदीप्ति शैलियों का प्रयोग किया है। जीवन के बहुआयामी और बहुपरती रुपो को वे इस मंजी हुई सहजता के साथ व्यक्त करते है जो नितान्त आयासहीन प्रतीत होती है लेकिन जिस प्रकार जीवन में निरंतर तनावों को झेलते हुए सहजता का सन्तुलन अर्जित करना दृष्टि की स्पष्टता तथा प्रयास की निरंतरता की मांग करता है, ठीक उसी प्रकार साहित्य में जीवन की संश्लिष्टता को प्रामाणिकता एवं सहजता के साथ व्यक्त करने के लिए कला विवेक का निरंतर सजग और सक्रिय रहना आवश्यक है जिसकी झलक उनकी कहानियों में मिलती है। उन्होंने लेखन के दौरान अपने अनुभव को हर मोड़ पर दिखाया है वो अपनी पूरी क्षमता के साथ विमान है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास - पृ -02
2. डॉ.हरदयाल, हिन्दी कहानी :परंपरा और प्रगति - पृ - 158-159
3. डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 101
4. वहीं - पृ - 101
5. डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ, हिन्दी कहानी के सौ वर्ष - पृ - 252
6. डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'काला बाप गोरा बाप' - पृ - 219
7. डॉ.मंजूलता सिंह, हिन्दी कहानी में युगबोध - पृ - 56
8. डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'उलझन' - पृ - 21
9. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कटाव' - पृ - 248
10. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'लोग' - पृ 129
11. डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'उलझन' - पृ - 28
12. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'शोर' - पृ - 239
13. डॉ.पुष्पाल सिंह शिवप्रसाद सिंह का कहानी कार्य (भाषा-द्रिमासिक पत्रिका -नवम्बर-दिसम्बर -2000)
14. डॉ.गौतम सचदेव, प्रेमचंद :कहानी शिल्प - पृ - 17
15. डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 119
16. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'उजाले का उल्लू' - पृ - 40-41
17. वहीं - पृ - 60
18. वहीं - पृ - 61

19. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'परवरिश के लिए' - पृ - 41

20. वहीं - पृ - 43

21. डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 121

22. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 174

23. डॉ.महीप सिंह,क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 172

24. डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 121

25. वहीं - पृ - 121

26. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कटाव' - पृ - 250

27. वहीं - पृ - 250

28. वहीं - पृ - 250

29. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'सन्नाटा' - पृ - 11

30. वहीं - पृ - 15

31. डॉ.महीप सिंह, इक्यावन कहानियाँ में भूमिका - पृ - 04

32. वहीं - पृ - 05

33. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'घिरे हुए क्षण' - पृ - 137

34. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 176

35. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'उजाले का उल्लू' - पृ - 66

36. वहीं - पृ - 60-61

37. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'सीधी रेखाओ का वृत' - पृ - 212

38. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 164

39. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 145

40. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'शोर' - पृ - 237

41. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'धूप की उंगलियों के निशान' - पृ - 123
42. डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 126
43. वहीं - पृ - 127
44. डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास - पृ - 300
45. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'सीधी रेखाओ का वृत' - पृ - 207
46. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'धूप की उंगलियों के निशान' - पृ - 120
47. वहीं - पृ - 123
48. वहीं - पृ - 128
49. डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 112
50. डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'विगत का डर' - पृ - 189
51. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'पति' - पृ - 257
52. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'लोग' - पृ - 130
53. वहीं - पृ - 131
54. डॉ.महीप सिंह, इक्यावन कहानियाँ भूमिका में से - पृ - 14
55. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'सन्नाटा' - पृ - 15
56. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'ब्लाटिंग पेपर' - पृ - 51
57. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कटाव' - पृ - 249
58. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'झूठ' - पृ - 28
59. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 140

60. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'ब्लाटिंग पेपर' - पृ - 56
61. डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'काला बाप गोरा बाप' - पृ - 214
62. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कुछ और कितना' - पृ - 215
63. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'पति' - पृ - 255
64. डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'उजाले का उल्लू' - पृ - 64
65. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'सन्नाटा' - पृ - 13
66. डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'धूप की उंगलियों के निशान' - पृ - 123
67. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 143
68. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'झूठ' - पृ - 34
69. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'परवरिश के लिए' - पृ - 37
70. डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 164